उल्हास कशालकर

“ कलाकारों के कलाकार” यही जिनका परिचय है ऐसे उल्हास कशालकरजी | इनका जन्म महाराष्ट्र के एक सांगितिक परिवार में हुआ है | पिताजी पेशे से वकील और संगीतज्ञ थे |

संगीत की शिक्षा घर में ही शुरू हुई तद्पश्चात विश्वविद्यालयीन शिक्षा प्राप्त करने के लिये नागपुर में रहे | वहाँ उन्हें राजाभाऊ कोगजे और प्रभाकर राव खर्डेनविस जी से संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई और वही पदव्युत्तर शिक्षा स्वर्णपदक के साथ संपन्न हुई | तत्पश्चात उल्हासजी पंडित गजानन बुवा जोशी और पंडित राम मराठे जी से तालीम लेने बम्बई पहुँचे |

वहाॅ उन्हें ग्वालियर, जयपुर और आग्रा घराने की विधिवत तालीम मिली | इसी नींव पे उनकी अपनी एक आकर्षक शैली बनी जिससे हम सब परिचित है |

देश विदेशों में अनेक संगीत सम्मेलन में उन्होंने अपने गायन की प्रस्तुति दी है | एक विचारवंत कलाकार और एक गुरू के रूप में वो विद्यादान का कार्य कर रहे है |

१९९२ से वो कलकत्ता के ITC संगीत रिसर्च एकेडमी मे गुरू है और बांग्लादेश के ढाका में परंपरा संगीतालय और पुणे में MIT गुरुकुल में विद्यादान का कार्य कर रहे है|

उल्हास जी के शिष्य आज देश विदेश में संगीत की परंपरा को आगे ले जा रहे है और जिनकी अपनी एक पेहेचान है |

उल्हास जी को अनेक सम्मानों से नवाजा गया है जिनमें प्रमुख है संगीत नाटक एकेडमी अवॉर्ड ,मध्यप्रदेश सरकार का तानसेन पुरस्कार ,गुजरात सरकार का ओंकारनाथ ठाकुर पुरस्कार ,और भारत सरकार का पद्मश्री सम्मान | इसके अलावा उन्हें स्वर-रत्न, राग ऋषि और जगत् गुरू शंकराचार्य ने गान तपस्वी उपाधि प्रदान की है |

‘ परंपरा से नवता ‘ - यही है उल्हासजी के गायन का परिचय |